डॉ. आई. जी पटेल की पुस्तक के विमोचन के अवसर पर दिया गया भाषण *

दुव्वुरी सुब्बाराव

गवर्नर होने के अनेक विशेषाधिकार होते हैं। उनमें से एक है पूर्ववर्ती गवर्नरों द्वारा लिखी गयी पुस्तकों का विमोचन करना। यह एक ऐसा सौभाग्य है जिसे मैं मूल्यवान मानता हूँ, कुछ ऐसा जो मेरे लिए महत्वपूर्ण होता है।

न्यूटन

2. चूँकि यह इस अवसर पर अपेक्षित है अत: मैं उस बात को दुहराना चाहता हूँ जो मैंने रिज़र्व बैंक के प्लैटिनम जुबली समारोह में कही थी।

3. आपमें से जिन लोगों ने विज्ञान के इतिहास को जाना है वे यह जानते होंगे कि सर आइजैक न्यूटन बौद्धिक रूप से अक्खड़ थे। जब उनके मित्र और प्रतिद्वन्द्वी रॉबर्ट हुक ने उनके गुरुत्वाकर्षण के नियम के लिए उन्हें साधुवाद दिया तब न्यूटन ने अपनी समस्त अक्खड़ता के साथ सामान्य नम्रता से उन्हें लिखा :

> 'यदि मैं थोड़ा आगे देख सका हूँ तो इसलिए कि
> मैं दानवों के कंधों पर खड़ा हूँ।'

यह ऐसी उक्ति है जिसका संबंध मैं स्वयं से जोड़ सकता हूँ। आज के इस उत्तेजनापूर्ण समय में रिज़र्व बैंक का गवर्नर होने पर मैं उन सभी असाधारण पुरुषों के प्रति कृतज्ञ और बौद्धिक रूप से ऋणी हूँ जिन्होंने इस महान संस्था को अनेक चुनौतियों के बीच से आगे बढ़ाते रहने का कार्य किया और भारत के आर्थिक इतिहास में अपनी छाप छोड़ी। इनमें से सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं डॉ. आई.जी.पटेल। मुझे गर्व है और मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मैं इस संस्था की वंश-परम्परा में उन्हीं के समान विद्यमान हूँ।

विशेष अवसर

4. मैं डॉ. पटेल को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था। जब मैंने सिविल सर्विस में कार्यग्रहण किया तब वे सरकार के पदानुक्रम में शीर्षस्थ सोपान पर थे; जब वे रिज़र्व बैंक के गवर्नर थे उस समय मैं आंध्र प्रदेश सरकार में एक कनिष्ठ अधिकारी था। मुझे दु:ख है कि उनसे मेरी कभी भेंट नहीं हो सकी। स्व. डॉ. पटेल के साथ मरणोपरांत यह निकटता, जो उनकी पुस्तक के विमोचन के अवसर पर हो सकी है - भले ही वह प्रतिनिधिक हो, मेरे लिए निश्चय ही विशिष्ट है।

ओयूपी

5. मैं ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे यह सौभाग्य प्रदान किया।

सुश्री अलकनंदा पटेल

6. आपमें से जो लोग श्रीमती अलकनंदा पटेल से परिचित हैं, वे आज उनसे वार्तालाप कर निस्संदेह अपनी स्मृतियों को ताजा कर सकेंगे। पिछले कुछ वर्षों से मैंने उनसे निकट मित्रता का संबंध विकसित किया है। मैं उनकी बुद्धिमत्ता, सौजन्य, जिंदादिली से हमेशा प्रभावित हुआ हूँ; और मैं इस बात से प्रभावित हुआ हूँ कि वे रिज़र्व बैंक में हम सबों से कितना स्नेह रखती हैं और इतने वर्ष बाद भी रिज़र्व बैंक से अटूट संबंध रखने के लिए वे प्रयासरत रही हैं।

अलकनंदा जी, इस अवसर पर आपकी उपस्थिति रिज़र्व बैंक में हम सबों के लिए बहुत महत्व रखती है।

यह पुस्तक

7. यह पुस्तक 'ऑफ इकोनॉमिक्स, पॉलिसी एंड डेवलपमेंट' डॉ. पटेल के अधिकतर अप्रकाशित निबंधों का संग्रह है।

- इनका कैनवस व्यापक है

  मुद्रा, वित्त, व्यापार, भुगतान संतुलन, आर्थिक विकास और अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था से संबंधित मुद्दे।

- इनमें एक लंबी समयावधि शामिल है।

  इनमें ऐसे निबंध हैं जो तब लिखे गये जब वे आईएमएफ में एक युवा अर्थशास्त्री थे और वे निबंध और प्रबंध भी है, जो तब लिखे गये जब डॉ.पटेल देश के प्रमुख बुद्धिजीवी के रूप में स्थापित हो चुके थे।

* 16 जुलाई 2012 को डॉ.आई.जी.पटेल की पुस्तक 'ऑफ इकोनॉमिक्स, पॉलिसी एंड डेवलपमेंट' के विमोचन समारोह में डॉ.दुव्वुरी सुब्बाराव, गवर्नर. भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा की गयी टिप्पणी

- इसका बौद्धिक स्पेक्ट्रम विशाल है
  - o गहन शैक्षिक उन्मुखता वाले प्रबंध
  - o गंभीर व्यावहारिक नीति संबंधी निहितार्थों वाले निबंध।

सभी निबंधों /प्रबंधों में जो सामान्य बात दिखाई पड़ती है, भले ही उनका विषय कुछ भी हो, वह है गहरा पांडित्य, तीक्ष्ण बुद्धि और सर्वोपरि लोकहित के लिए स्थायी चिंता की भावना।

विचारों और मुद्दों की अनुगूँज आज भी

8. पुस्तक के पृष्ठ उलटने पर मुझे जिस बात ने अत्यंत प्रभावित किया वह यह है कि डॉ. पटेल ने जिन विचारों और मुद्दों पर ध्यान दिया उनकी गूँज देश और दुनिया में आज भी सर्वत्र सुनाई पड़ती है।

उन्होंने जिन विचारों को सामने रखा उनमें से कुछ पर मैं टिप्पणी करूँगा।

I.मौद्रिक नीति

9. एक निबंध में डॉ. पटेल युद्ध-पूर्व के वर्षों की तुलना में युद्ध-पश्चात् के वर्षों में मौद्रिक नीति के विकास की समीक्षा करते हैं। वे लिखते हैं ;

[उद्धरण] 'मौद्रिक नीति का सर्वोत्तम परीक्षण करना इसकी इस योग्यता में निहित है कि यह मुद्रा आपूर्ति का नियंत्रण किस प्रकार करती है जिससे कीमतों में वृद्धि पर रोक लगती है, लेकिन उत्पादन में वृद्धि मंद नहीं होती।' [उद्धरण समाप्त]

10. इस वाक्य का सार-तत्व है उत्पादन को मंद किये बिना कीमतों में वृद्धि को रोकना; अर्थात्, सर्वोत्कृष्ट वृद्धि बनाम मुद्रास्फीति का वाद-विवाद, जो आज भी चल रहा है।

11. इस संदर्भ में एक प्रासंगिक प्रश्न निम्नलिखित है :

'रिज़र्व बैंक किस सीमा तक ऐसा कार्य कर रहा है जो उत्पादन को बिना नुकसान पहुँचाये कीमतों को नियंत्रित रखने की डॉ. पटेल की उक्ति से संगति रखता है।'

12. अब तक रिज़र्व बैंक की सबसे कटु आलोचना यह की जाती रही है कि निरंतर और लंबे समय तक मौद्रिक नीति को कठोर बनाये रखना - ब्याज दर को 13 बार बढ़ाते हुए - हम मुद्रास्फीति को रोकने में सफल नहीं हुए हैं। दूसरी ओर हमने वृद्धि के संदर्भ में समझौता किया है।

13. अतः, प्रश्न यह है कि क्या डॉ. पटेल ने जो कहा था, उसका अनुपालन करने में रिज़र्व बैंक विफल रहा?

14. मैं ऐसा नहीं मानता।

वस्तुतः मेरा तर्क यह होगा कि रिज़र्व बैंक का कार्य मूल्य-स्थिरता के साथ वृद्धि का बचाव करने के प्रयास के बारे में डॉ. पटेल की उक्ति से पूरी तरह संगति रखता है।

15. मुझे इस बात को स्पष्ट करने दें।

- मुद्रास्फीति वृद्धि के लिए हानिकर होती है। इससे असहमत नहीं हुआ जा सकता है।
- मध्यावधि में वृद्धि का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए न्यून और स्थिर मुद्रास्फीति एक आवश्यक पूर्व-शर्त होती है। केवल मूल्य-स्थिरता रहने पर ही उपभोक्ता और निवेशक सुविज्ञ निर्णय ले सकते हैं।
- रिज़र्व बैंक के मौद्रिक दृष्टिकोण का लक्ष्य रहा है माँग को अवरुद्ध रखना और मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं को वश में रखना।
- यह एक स्वीकृत तथ्य है कि मौद्रिक कठोरता ने अल्पावधि में वृद्धि का कुछ त्याग किया है। मूल्य-स्थिरता के लिए यह अपरिहार्य कीमत तो चुकानी ही पड़ती है। लेकिन वृद्धि का त्याग अल्पकाल के लिए किया गया है। मध्यावधि में वृद्धि के लिए कोई समझौताकारी तालमेल नहीं होता।

फिलिप्स वक्र

16. इस वृद्धि- मुद्रास्फीति संबंधी वाद-विवाद का एक अन्य पहलू, जो हाल की अवधि में सामने आया है, फिलिप्स वक्र के संदर्भ में वृद्धि- मुद्रास्फीति के बीच समझौताकारी तालमेल है।

- तर्क यह दिया जाता है कि हम उच्च मुद्रास्फीति को सहन करते हुए वृद्धि को बढ़ा सकते हैं। यह भ्रमपूर्ण स्थिति है।
- वृद्धि और मुद्रास्फीति के बीच का संबंध एक समान नहीं होता।
- मुद्रास्फीति का एक न्यूनतम स्तर होता है।
- न्यूनतम स्तर के नीचे, हो सकता है कि वृद्धि और मुद्रास्फीति के बीच समझौताकारी तालमेल हो।
- न्यूनतम स्तर के ऊपर, वृद्धि और मुद्रास्फीति के बीच कोई समझौताकारी तालमेल नहीं होता, उच्चतर मुद्रास्फीति होने से वृद्धि को नुकसान पहुँचता है। 7.25 प्रतिशत की डब्लूपीआई मुद्रास्फीति और सीपीआई मुद्रास्फीति के दो अंको में बने रहने से हम न्यूनतम स्तर से काफी ऊपर हैं।

- मुद्रास्फीति का न्यूनतम स्तर क्या होता है? यह 5 प्रतिशत के आसपास हो सकता है। आज मुद्रास्फीति न्यूनतम स्तर के ऊपर है।

17. मूल्य-स्थिरता के साथ वृद्धि को बनाये रखने की डॉ. पटेल की उक्ति मौद्रिक नीति का सर्वोत्कृष्ट उद्देश्य है।

- यह कुछ ऐसा है जिसके प्रति हम गंभीर रूप से सजग हैं और यह कुछ ऐसा है जिसका पालन हम आज भी रिज़र्व बैंक में कर रहे हैं।

II. संप्रेषण की चुनौतियाँ

18. दूसरा मुद्दा, जिसके बारे में मैं चर्चा करना चाहता हूँ, वह है संप्रेषण की चुनौतियाँ। डॉ. पटेल का एक प्रबंध है और उस प्रबंध से मैं एक वाक्य उद्धृत करना चाहता हूँ :

'राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रवृत्तियों के संबंध में अपने स्वयं के दृष्टिकोण को संप्रेषण करने के अतिरिक्त ऐसे तीन क्षेत्र हैं जिन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। पहला है यह मोहक लेकिन भ्रामक क्षेत्र कि केंद्रीय बैंक मौद्रिक और विदेशी मुद्रा नीति के संबंध में अपने विनिर्दिष्ट उत्तरदायित्व का क्या और कैसे संप्रेषण देता है; दूसरा है इसके विनियामक कार्य से संबंधित मुद्दों पर संप्रेषित करना; और अंतिम है संसद सहित सरकार के साथ संप्रेषण।'

विरोधाभास

19. मैं डॉ. पटेल के इस कथन से अत्यंत प्रभावित हूँ। ऐसा इसकी अंतर्वस्तु को लेकर नहीं है, न ही इसके संदर्भ को लेकर है कि डॉ.पटेल ने यह सब कहना पसंद किया। क्योंकि डॉ. पटेल ने केंद्रीय बैंक द्वारा संप्रेषण के संबंध में जिस समय यह लिखा था वह विरोधाभास का समय था।

20. जैसाकि डॉ.पटेल स्वयं स्वीकार करते हैं :

'मैं उस युग का हूँ जब केंद्रीय बैंक गवर्नरों को शिशुओं की भाँति देखा जाना पसंद किया जाता है, न कि सुना जाना। हालाँकि जनता के बीच उन्हें मुस्कुराने की इजाजत होती है, उन्हें मोनालिसा का अनुकरण करना होता है और रहस्य का वातावरण बनाये रखना होता है।'

21. डॉ.पटेल के प्रबोधन के आधार पर आज रिज़र्व बैंक का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाये कि यह अधिक सार्थक रूप से सूचनात्मक बने।

एलन ग्रीन्स्पैन - संप्रेषण के क्षेत्र में वरिष्ठ व्यक्तित्व

22. यह ईश-निंदा के समतुल्य होगा यदि केंद्रीय बैंक संप्रेषण के बारे में कुछ कहने के पहले संप्रेषण क्षेत्र के समादृत व्यक्तित्व - एलन ग्रीन्स्पैन को श्रद्धा-सुमन अर्पित नहीं किया जाये। अतः, मैं इसके साथ आगे बढ़ना चाहूँगा।

23. निस्संदेह मैं आपको उनकी होने वाली पत्नी के सामने विवाह-प्रस्ताव रखने से संबंधित चुटकुला नहीं सुनाऊँगा। वह घिसा-पिटा है।

24. ग्रीन्स्पैन इस बात के लिए मशहूर हैं कि उन्होंने केंद्रीय बैंक संप्रेषण को कला के रूप में बदल दिया। वर्ष 1987 में फेडरल रिज़र्व के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करने के शीघ्र बाद उन्होंने कहा था, 'चूँकि अब मैं एक केंद्रीय बैंकर बन गया हूँ, मैंने असंबद्धता से बुदबुदाना सीख लिया है। यदि आपको मेरी बातें अनुचित रूप से स्पष्ट लगें, तो आपने निश्चय ही मेरी बातों को गलत समझ लिया होगा'।

25. लगभग 15 वर्षों तक अपने पद पर बने रहने के बाद अक्तूबर 2001 में ग्रीन्स्पैन ने पूरी तरह से अपने विचार बदल लिये और यह कहा कि 'खुलापन बेहतर आर्थिक कार्यसंपादन के लिए बहुत अधिक उपयोगी होता है। खुलापन एक मुक्त और प्रजातांत्रिक समाज में किसी केंद्रीय बैंक की बाध्यता होती है। हमारे कार्यकलापों की पारदर्शिता एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम अपने आपको अपने नागरिकों के प्रति जवाबदेह बनाते हैं और उन्हें यह निर्णय लेने में मदद करते हैं कि क्या हम यह कार्य करने के योग्य हैं'।

आई.जी.पटेल - दूरदर्शी

26. जब केंद्रीय बैंक संप्रेषण एक लोकप्रिय बौद्धिक मुद्दा बन चुका था, उससे बहुत पहले डॉ.पटेल की दूरदर्शिता उल्लेखनीय रूप से अनुभव की गयी थी।

27. अब मैं संप्रेषण नीति के संबंध में समसामयिक परिप्रेक्ष्य पर टिप्पणी करना चाहूँगा।

केंद्रीय बैंक संप्रेषण क्यों महत्वपूर्ण है?

28. पिछले दो दशकों में केंद्रीय बैंकों ने अधिक स्पष्ट संप्रेषण और बड़ी पारदर्शिता की ओर कदम बढ़ाये हैं। इसके पीछे अनेक अभिप्रेरण काम करते हैं।

29. सर्वप्रथम, केंद्रीय बैंकों ने यह महसूस किया है कि खुली और पारदर्शी संप्रेषण प्रत्याशित निष्कर्ष निकालते हुए नीतिगत प्रभावोत्पादकता को बढ़ाती है। सुविचारित दुर्बोधता से बड़ी पारदर्शिता की ओर केंद्रीय बैंक की विचारधारा में यह बदलाव वास्तव में मौद्रिक नीति के सिद्धांत में बदलाव को प्रतिबिंबित करता है।

रॉबर्ट लुकास

30. 1990 के दशक के प्रारंभ तक, मौद्रिक नीति के संबंध में नोबेल पुरस्कार विजेता रॉबर्ट लुकास के इस तर्क का तगड़ा प्रभाव पड़ता

रहा था कि मौद्रिक नीति वास्तविक वैरिएबलों को वृद्धि की तरह ही प्रभावित करती है, और यह तभी होता है, यदि नीतिगत परिवर्तन अप्रत्याशित होते हैं। इससे खुलापन और स्पष्टता पर दुर्बोधता का आवरण चढ़ जाता था। तथापि, लुकास के वक्तव्य को नकार दिये जाने पर यह संदेश मिला कि मौद्रिक नीति हमेशा सांकेतिक वैरिएबलों को मुद्रास्फीति की ही तरह प्रभावित करती है, भले ही वह पूर्णतया अप्रत्याशित हो।

दो नोबेल विद्वान

31. 1980 के दशक में दो अर्थशास्त्री, जो नोबेल पुरस्कार विजेता भी थे, फिन किडलैंड और एड प्रेसकाट, ने तर्क प्रस्तुत किया कि विवेकाधीन नीति की बजाय पूर्ण पारदर्शी नियम अधिक कारगर और विश्वसनीय होते हैं। यह विवेक पर नियमों की बढ़त की और अधिक केंद्रीय बैंक पारदर्शिता की शुरुआत थी।

यूएस फेड में परिवर्तन

32. दुर्बोधता से पारदर्शिता की ओर इस बदलाव का अर्थपूर्ण चित्रण यूएस फेड की संप्रेषण नीति में परिवर्तन में देखने को मिलता है। आज के परिप्रेक्ष्य में इसकी कल्पना करना कठिन है लेकिन वर्ष 1994 के पूर्व यूएस फेड फेड फंड्स दर को प्रकट नहीं करता था, तब बाजार को फेड के खुला बाजार परिचालनों के समय-निर्धारण, सिक्वेंसिंग और मात्रा से दर का अनुमान लगाना होता था।

33. इसके ठीक विपरीत आज यूएस फेड न केवल दर की घोषणा करता है बल्कि नीति के भावी प्रक्षेप-पथ का स्पष्ट संकेत भी देता है।

नीति के रूप में संप्रेषण - विस्तारित अवधि

34. कभी-कभी नीति का वाहक बनने के बदले संप्रेषण स्वयं नीति बन जाती है। संकट के दौरान अमरीका के अनुभव से हम यह देखते हैं कि फेड ने महसूस किया कि दर को 'एक विस्तारित अवधि तक' नीचे रखने की इसकी बारंबार की गयी घोषणा से बाजार कुछ निश्चित अनुमान लगा सके कि इस 'विस्तारित अवधि' का अर्थ क्या है। इस संदर्भ में, कुछ नीति विश्लेषकों ने तर्क दिया था कि फेड को अपने इस वक्तव्य को संप्रेषित करने के लिए प्रयुक्त भाषा में संशोधन करते हुए यह कहना चाहिए कि वह लंबी अवधि तक फेडरल फंड्स रेट को नीचे रखने की प्रत्याशा करता है, बजाय इसके कि बाजार इसका अर्थ स्वयं निकाले। वास्तव में, फेड ने ऐसा ही किया - उसने सुव्यक्त रूप से कहा कि न्यून ब्याज दर वर्ष 2014 तक बनी रहेगी, जो इतना विनिर्दिष्ट था जितना बाजार चाहता था।

35. एक और कारक जिसने केंद्रीय बैंकों को संप्रेषण पर अधिक जोर देने के लिए प्रेरित किया, वह है संकट-पूर्व के वर्षों में कठिनाई से अर्जित उनकी स्वायत्तता। केंद्रीय बैंकों ने अधिक खुले संप्रेषण को अधिकाधिक अपनाया है ताकि वे इस आलोचना का प्रतिकार कर सकें कि एक स्वायत्त केंद्रीय बैंक, जिसमें निर्णय लेने वाले चुने नहीं जाते, एक जनतांत्रिक ढाँचे से संगति नहीं रखता है।

रिज़र्व बैंक में संप्रेषण

36. रिज़र्व बैंक में हमने संप्रेषण में सुधार का प्रयास न केवल मौद्रिक नीति के संबंध में किया है बल्कि अपने अधिदेश के समस्त क्षेत्र में की है। हमने रिज़र्व बैंक को रहस्य के आवरण से निकालने का प्रयास किया है।

37. हम रिज़र्व बैंक के संप्रेषण में सुधार के लिए अपना सुव्यक्त प्रयास जारी रखे हुए हैं।

i. नीतिगत दस्तावेजों को युक्तियुक्त बनाया
ii. भावी मार्गदर्शन - इस जोखिम को नियंत्रित करना कि बाजार शर्तबद्धता की उपेक्षा नहीं करता और एक अप्रतिसंहरणीय प्रतिबद्धता पर मार्गदर्शन का निर्वचन करना
iii. नीति-पश्चात् प्रेस सम्मेलन और साक्षात्कार की व्यवस्था
iv. विश्लेषकों के साथ टेली-कन्फरेंस
v. अपने क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से सूचना प्रसार
vi. सभी क्षेत्रों में, मौद्रिक नीति से बाहर के क्षेत्रों में भी, हमने अपने चर्चा-पत्र प्रस्तुत किये जो नये बैंक लाइसेंसों, सर्वाधिक व्यापक संप्रेषण अभ्यास से संबंध रखते थे।

संप्रेषण की दुविधा

38. ऐसा नहीं है कि अधिक संप्रेषण बेहतर संप्रेषण होता है। केंद्रीय बैंकों के अधिक सूचनात्मक बन जाने पर भी वे दुविधाओं का सामना करते हैं:

i. हम क्या कहें?
ii. हम कैसे कहें?
iii. हम कितना कहें?

39. केंद्रीय बैंकों के लिए उस उक्ति का प्रयोग किया जाता था, जो सब संस्कृतियों में माँ अपने बच्चों को कहा करती थी -

'यदि तुम कुछा अच्छा नहीं कह सकते तो कुछ कहो ही नहीं।'

40. लेकिन पारदर्शिता के अभियान ने इसे बदल दिया है। अब उक्ति यह होती है : 'किसी सूचना को तभी रोको, जब इसे रोका जाना अत्यावश्यक हो जाये'।

41. यह ऐसा संघर्ष है, जिससे हम प्रतिदिन जूझते हैं।

42. उदाहरण के लिए, वित्तीय स्थिरता रिपोर्टों में -

- वित्तीय क्षेत्र का सही चित्रण
- लेकिन इससे विघटनकारी प्रतिक्रिया हो सकती है, यहाँ तक कि तहलका भी मच सकता है
- भीतर ही भीतर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है जिसका प्रबंध किया जा सकता था और उसे रोका जा सकता था।

43. यह ऐसी चुनौती है जिससे रिज़र्व बैंक में हमें जूझना पड़ता है, केवल इस बारे में नहीं कि किसे प्रकट किया जाये, लेकिन कितना प्रकट किया जाये और इसे किस प्रकार कहा जाये।

III. अपने वक्तव्य के लिए गवर्नर की जिम्मेवारी

44. अब मैं गवर्नर की जिम्मेवारी के बारे में बात करूँगा। मैं डॉ. पटेल को उद्धृत करना चाहूँगा :

> 'लेकिन बात यह है कि जब ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न उठते हों तब गवर्नर निष्क्रिय नहीं रह सकता। वह एक लोकसेवक होता है जिसकी निष्ठा देश और संविधान के प्रति होती है - न कि तत्समय की सरकार के प्रति। और फिर भी, वह इस प्रकार व्यवहार नहीं कर सकता, मानो प्रत्येक मुद्दा उसके लिए बहुत महत्व रखता हो। उसे अपनी जमीन तलाशनी पड़ती है और सर्वोपरि उसे विवेकशील होना पड़ता है। सरकार को नाराज किये बिना वह एक वाद-विवाद आरंभ कर सकता है और तर्क की दिशा निश्चित कर सकता है। उसका अंतिम लक्ष्य होता है मुक्त वाद-विवाद के लोकतांत्रिक और परंपरागत मूल्यों की रक्षा करना।'

45. संक्षेप में, डॉ.पटेल ने कहा था कि नुक्ताचीनी न करें। अपनी लड़ाई खुद चुनें। एक बार लड़ाई चुन लेने पर दिलेरी से लड़ें।

46. मैं अपने पूर्ववर्ती सभी गवर्नरों को श्रद्धासुमन अर्पित करना चाहता हूँ जिन्होंने इस उक्ति का अनुसरण किया है। देश में अनेक महत्वपूर्ण सुधार के उपाय और नीतिगत पहलों की शुरुआत गवर्नरों द्वारा आरंभ की गई चर्चा से ही हुई। निस्संदेह, वे रिज़र्व बैंक की संस्थागत समझदारी को स्पष्ट कर रहे हैं।

47. पिछले चार वर्षों में, हमने पब्लिक डोमेन में अनेक मुद्दों को उठाने की चेष्टा की है क्योंकि हम यह मानते थे कि उन पर वाद-विवाद करना आवश्यक है :

- वित्तीय स्थिरता के लिए रिज़र्व बैंक की भूमिका और उत्तरदायित्व।
- केंद्रीय बैंक और वस्तुतः सभी विनियामकों की स्वतंत्रता की रक्षा करने का महत्व।
- राजकोषीय जवाबदेही के बारे में गंभीर होने का महत्व।
- कारपोरेट अभिशासन के लिए अनुकरणीय मानक स्थापित करना।

48. सरकार और रिज़र्व बैंक एक दूसरे के शत्रु नहीं होते। वे समान लक्ष्यों को साझा करते हैं। मैं सोचता हूँ कि कुछ असहमति स्वाभाविक होती है। सरकार के साथ असहमति होती है, सरकार और विनियामकों एवं सार्वजनिक नीति-संस्थाओं के बीच असहमति होती है। हम जानते हैं कि असहमति और वाद-विवाद से समझदारी आती है। हमें जिसकी आवश्यकता है, वह है इस असहमति में से समझदारी के लिए एक विवेकपूर्ण तंत्र का विकास करना।

49. डॉ. पटेल यह ठीक ही कहते हैं कि गवर्नर और निस्संदेह रिज़र्व बैंक का भी अंतिम लक्ष्य होता है मुक्त वाद-विवाद के लोकतांत्रिक और परंपरागत मूल्यों की रक्षा करना।

50. केंद्रीय बैंकों को जवाबदेही प्रस्तुत करनी होती है - यह विशेष रूप से इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि केंद्रीय बैंक के पदाधिकारी निर्वाचित नहीं होते और इसलिए उनके पास निर्वाचक अधिदेश नहीं होता। हम जो निर्णय लेते हैं उसका प्रभाव पूरे देश पर होता है। अतः हमें अपने कार्यों और उनके परिणामों के लिए जवाबदेही प्रस्तुत करने के प्रति सजग होना चाहिए।

IV. परामर्शदाताओं को सलाह देना

51. अंतिम विन्दु, जिस पर मैं चर्चा करना चाहता हूँ, वह है परामर्शदाताओं को सलाह देना। इस पुस्तक में एक छोटा अंश है, जो वास्तव में एक लघु पुस्तक ही है, जिसमें डॉ.पटेल ने सरकार के परामर्शदाताओं के बारे में लिखा है। इसने मुझे एक सूत्र दिया है।

52. यह सरकार के अर्थशास्त्रियों की भूमिका और उत्तरदायित्व के बारे में और सार्वजनिक नीति पर उनके प्रभाव के बारे में है। यह विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है कि डॉ.पटेल सरकार के पहले आर्थिक सलाहकारों में से एक थे।

53. सरकार के अर्थशास्त्रियों की उक्ति हमेशा से यह रही है, 'वस्तुनिष्ठ विश्लेषण पर ध्यान दें और सक्षम, पूर्वग्रह रहित तथा पेशेवर सलाह दें। राजनीतिक संभाव्यता के बारे में चिंता न करें।'

54. इसे पढ़ते समय जिस बात से मैं प्रभावित हुआ, वह सचमुच सिविल सेवकों को सिखायी गयी मूल्य-प्रणाली है :

- आपका काम है राजनीतिक कार्यपालिका को नीति के संबंध में सलाह देना और परिश्रमपूर्वक उस नीति को कार्यान्वित करना।
- आपको राजनीति की दृष्टि से पूर्वग्रह से ग्रस्त नहीं होना है।
- वास्तव में आपको किसी बाहरी विचार से पूर्वग्रह नहीं रखना है।
- अपनी पेशेवर सलाह दें और निर्णय की बात राजनीतिक कार्यपालिका पर छोड़ दें।

55. सिविल सेवक के रूप में अपने 35 वर्षों के अनुभव के साथ मैं इस प्रतिमान के बारे में संशयी होने लगा हूँ। क्या यह बहुत अधिक अवरोधक नहीं है?

56. क्या सिविल सेवक को वस्तुनिष्ठ सलाह देने तक स्वयं को सीमित रखना चाहिए या क्या उसे इसकी संभाव्यता के बारे में भी चिंतित होना चाहिए?

57. यदि सिविल सेवक ऐसे विकल्पों का सुझाव देता है जो बिलकुल संभाव्य नहीं हैं, तो उसके सुझावों का कोई मूल्य नहीं होता। वे राजनीतिक कार्यपालक के जीवन को और कठिन बना रहे हैं।

58. नया सिद्धांत - आप निष्कपट, निष्पक्ष सलाह दें। लेकिन ऐसा करते समय आप जिस समाधान का सुझाव दे रहे हों उसकी जनतांत्रिक संभाव्यताओं के बारे में संवेदनशील बनें।

59. मैं यह नहीं कह रहा कि सिविल सेवकों को राजनीतिक बना दिया जाये या वे कम ईमानदार हों। मैं केवल इतना कह रहा हूँ कि उन्हें व्यावहारिक, कार्य-योग्य, जनतांत्रिक रूप से सम्भाव्य समाधानों का सुझाव देना चाहिए।

60. डॉ.पटेल की उस पुस्तक के अंश के संदर्भ में प्रश्न यह है:

- क्या सरकार के अर्थशास्त्रियों के लिए आचार संहिता दफ्तरशाहों के लिए निर्धारित आचार संहिता से अलग होती है?
- दूसरे शब्दों में, क्या सरकार के अर्थशास्त्रियों को भी अपनी सलाह में काट-छाँट संभाव्यता के आधार पर करनी चाहिए या उन्हें दफ्तरशाहों और राजनीतिक कार्यपालकों द्वारा निर्धारित किये जाने के लिए छोड़ देना चाहिए?

समाहार

61. मैंने डॉ. पटेल द्वारा उठाये गये कुछ मुद्दों पर टिप्पणी प्रस्तुत की है:

i. मौद्रिक नीति के उद्देश्य
ii. केंद्रीय बैंकों के संप्रेषण संबंधी चुनौतियाँ
iii. महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दों पर सार्वजनिक वाद-विवाद आरंभ करवाने की गवर्नर की जिम्मेवारी
iv. सरकार के परामर्शदाताओं के लिए आचार संहिता।

62. ये निबंध एक लंबी अवधि में लिखे गये हैं, जबसे

i. दुनिया बदल गयी है
ii. दुनिया के विचार बदले हैं
iii. रिज़र्व बैंक बदल गया है
iv. अर्थशास्त्र बदला है।

मूल्य प्रणाली

63. परिवर्तन के इस प्रवाह में जो नहीं बदला है, वह है मूल्य प्रणाली, जो लोकसेवकों का मार्गदर्शन करेगी।

64. यह मूल्य प्रणाली ही है जिसे डॉ. आई.जी.पटेल ने पूर्णतया मूर्त रूप में प्रस्तुत किया।

65. रिज़र्व बैंक को डॉ.पटेल द्वारा अपने पीछे छोड़ी गयी विरासत पर गर्व है और इस पुस्तक के विमोचन से उनके साथ इसका साहचर्य नवीकृत करने से वह हर्षोत्फुल्ल है।

66. संपादकों को बधाई

डॉ. दीना खटखटे

डॉ. वाई.वी.रेड्डी

67. एक बार पुनः मैं श्रीमती पटेल और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस को मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद देता हूँ।